ब्रह्मसूत्र : एक दार्शनिक परिचय

विवेक कुमार

महर्षि व्यास प्रणीत ब्रह्मसूत्र परब्रह्म परमेश्वर स्वरूप निरूपण में अति उत्तम माना गया है। इसके प्रत्येक शब्दों में गहन गम्भीर अर्थ छिपा हुआ है। यद्यपि परब्रह्म परमेश्वर का यथार्थ लक्षण जानने के लिए ही ब्रह्मसूत्र की रचना की गयी है तथापि उसको देखने वालों के दृष्टिकोण अलग–अलग होने के कारण उसकी व्याख्याएँ विविध हो गयी है।

यह ग्रन्थ वेदों के अन्तिम सिद्धान्त का निदर्शन करता है, अतः इसे ''वेदान्त दर्शन'' भी कहते हैं। वेदान्त दर्शन भारतीय अध्यात्मशास्त्र का मुकुटमणि माना जाता है। भारतीय दार्शनिक प्रवृत्तियों तथा तार्किक मान्यताओं का पूर्ण उत्कर्ष वेदान्त में प्राप्त होता है। वेदान्त का मूल उपनिषद है। ब्रह्मसूत्र उपनिषदों के विचारों में सामंजस्य लाने के उद्देश्य से लिखा गया था। विद्वानों का मानना था कि उपनिषद की शिक्षाओं में संगति नहीं है, जिस बात की शिक्षा एक उपनिषद में दी गई है, उसी बात को दूसरे उपनिषद में काटा गया है। कुछ विद्वानों का मत था कि उपनिषदों में ''एकवाद'' की शिक्षा दी गई है तो कुछ का मत था कि इसमें द्वैतवाद की शिक्षा दी गई है। बादरायण ने कुछ लोगों के दृष्टिकोण में जो विरोध था उसी को दूर करने के लिए ब्रह्मसूत्र की रचना की। उपनिषद् की शिक्षाओं में जो विभिन्नता दीख पड़ती है वह उपनिषदों को न समझने के कारण ही है। ब्रह्मसूत्र में मुख्य रूप से ब्रह्मस्वरूप का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।